



Mangalvar Vrat Katha in English

Once there lived a Brahman couple. They were issueless. So their life was very unhappy. The Brahman went to the jungles to appease Lord Hanuman. He would pray for a child in his prayers. His wife used to observe fasts on Tuesdays to placate the Lord. She used to take her food on Mondays only after offering Prasad to Lord Hanuman. Once she observed some special fast for the whole day. So she could not offer Prasad to Hanuman. She was very sorry for it and felt guilty. She decided to observe a fast till the coming Tuesday.

She said to herself that she would take her meals only after offering Prasad to Hanuman. She became weak and fragile and even fainted due to the long fast. Hanuman took pity on her and appeared before her in the guise of a child. Hanuman said, I bless you with a beautiful son. He will always serve you, day and night. He then disappeared after blessing the lady.

Fortunately, the lady got a beautiful son. She named him Mangal. The Brahman returned home after some months. He saw a handsome child playing in his courtyard. He became suspicious and said to his wife, Whose child is this? Have you indulged in adultery? The woman said politely, My dear husband, I am a chaste lady. I used to observe Tuesday fast in your absence to please Lord Hanuman. He has blessed me with this child. Please believe me.

The Brahman kept mum but deep in his heart, doubts began to curl up every moment. The lady was helpless. One day the Brahman was going to take his bath at some nearby well. The lady told him, Please take Mangal along with you. He is quite grown-up. He will fetch water for your bath. He will also rub your back.

The Brahman agreed and took the boy along with him. He thought it would be a good occasion to push him into the well and to get-rid of a sinful child for good. As the boy was to fetch water, the Brahman pushed the boy into the well and returned home. To her great surprise, the woman noticed that the Brahman did not have wet dhoti on his shoulders. She said, Have you taken your bath? The Brahman said, Yes.

The lady said, Please give me your wet dhoti to enable me to spread it on the string. The Brahman was nonplussed. He had guilty conscience. He murmured some words and tried to leave the house. The wife said, Where is my Mangal? Where is my Mangal? O! Mangal, appear before my eyes if I am a chaste lady and you are my true son. To the great surprise of both the wife and the husband, Mangal appeared at the door. He embraced his mother and touched his father's feet. That night Lord Hanuman appeared before the Brahman in his dreams and said, O! poor creature, I blessed you with a son, and you suspect your wife of adultery. You must feel sorry for it. The Brahman realized his mistake. His wife regularly observed fasts on Tuesdays. Thereafter they led a happy life. It is said that whosoever reads or listens to this story and keeps regular fasts Lord Hanuman protects him from all evils and bestows all happiness.

Mangalvar Vrat Katha in Hindi

ऋषिनगर में केशवदत्त ब्राह्मण अपनी पत्नी अंजलि के साथ रहता था। केशवदत्त के घर में धन-संपत्ति की कोई कमी नहीं थी। नगर में सभी केशवदत्त का सम्मान करते थे, लेकिन केशवदत्त संतान नहीं होने से बहुत चिंतित रहता था। दोनों पति-पत्नी प्रति मंगलवार को मंदिर में जाकर हनुमानजी की पूजा करते थे। विधिवत मंगलवार का व्रत करते हुए कई वर्ष बीत गए। ब्राह्मण बहुत निराश हो गया, लेकिन उसने व्रत करना नहीं छोड़ा। कुछ दिनों के बाद केशवदत्त हनुमानजी की पूजा करने के लिए जंगल में चला गया। उसकी पत्नी अंजलि घर में रहकर मंगलवार का व्रत करने लगी।

दोनों पति-पत्नी पुत्र-प्राप्ति के लिए मंगलवार का विधिवत व्रत करने लगे। कुछ दिनों बाद अंजलि ने अगले मंगलवार को व्रत किया लेकिन किसी कारणवश उस दिन अंजलि हनुमानजी को भोग नहीं लगा सकी और उस दिन वह सूर्यास्त के बाद भूखी ही सो गई। अगले मंगलवार को हनुमानजी को भोग लगाए बिना उसने भोजन नहीं करने का प्रण कर लिया। छः दिन तक अंजलि भूखी-प्यासी रही। सातवें दिन मंगलवार को अंजलि ने हनुमानजी की पूजा की, लेकिन तभी भूख-प्यास के कारण अंजलि बेहोश हो गई। हनुमानजी ने उसे स्वप्न में दर्शन देते हुए कहा- 'उठो पुत्री! मैं तुम्हारी पूजा-पाठ से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हें सुंदर और सुयोग्य पुत्र होने का वर देता हूँ।'

यह कहकर हनुमानजी अंतर्धान हो गए। तत्काल अंजलि ने उठकर हनुमानजी को भोग लगाया और स्वयं भोजन किया। हनुमानजी की अनुकम्पा से अंजलि ने एक सुंदर शिशु को जन्म दिया। मंगलवार को जन्म लेने के कारण उस बच्चे का नाम मंगलप्रसाद रखा गया। कुछ दिनों बाद अंजलि का पति केशवदत्त भी घर लौट आया। उसने मंगल को देखा तो अंजलि से पूछा- 'यह सुंदर बच्चा किसका है?' अंजलि ने खुश होते हुए हनुमानजी के दर्शन देने और पुत्र प्राप्त होने का वरदान देने की सारी कथा सुना दी। लेकिन केशवदत्त को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उसके मन में पता नहीं कैसे यह कलुषित विचार आ गया कि अंजलि ने उसके साथ विश्वासघात किया है। अपने पापों को छिपाने के लिए अंजलि झूठ बोल रही है। केशवदत्त ने उस बच्चे को मार डालने की योजना बनाई। एक दिन केशवदत्त स्नान के लिए कुएँ पर गया। मंगल भी उसके साथ था।

केशवदत्त ने मौका देखकर मंगल को कुएँ में फेंक दिया और घर आकर बहाना बना दिया कि मंगल तो कुएँ पर मेरे पास पहुँचा ही नहीं। केशवदत्त के इतने कहने के ठीक बाद मंगल दौड़ता हुआ घर लौट आया। केशवदत्त मंगल को देखकर बुरी तरह हैरान हो उठा। उसी रात हनुमानजी ने केशवदत्त को स्वप्न में दर्शन देते हुए कहा- 'तुम दोनों के मंगलवार के व्रत करने से प्रसन्न होकर, पुत्रजन्म का वर मैंने दिया था। फिर तुम अपनी पत्नी को कुलटा क्यों समझते हो!' उसी समय केशवदत्त ने अंजलि को जगाकर उससे क्षमा माँगते हुए स्वप्न में हनुमानजी के दर्शन देने की सारी कहानी सुनाई। केशवदत्त ने अपने बेटे को हृदय से लगाकर बहुत प्यार किया। उस दिन के बाद सभी आनंदपूर्वक रहने लगे। मंगलवार का विधिवत व्रत करने से केशवदत्त और उनके सभी कष्ट

दूर हो गए। इस तरह जो स्त्री-पुरुष विधिवत मंगलवार का व्रत करके व्रतकथा सुनते हैं, हनुमानजी उनके सभी कष्ट दूर करके घर में धन-संपत्ति का भंडार भर देते हैं। शरीर के सभी रक्त विकार के रोग भी नष्ट हो जाते हैं।